

कलाकर्म एक विचित्र उन्माद है। इसे विश्वास से सहेजना है- सम्पूर्णता से, पहाड़ों के धैर्य के समान, मौन प्रतीक्षा में, अकेले ही। जो कुछ सामने है, प्रत्यक्ष है, पर केवल आँखें नहीं देख पातीं। रूप से अतिरूप तक, अनेक अपरिचित सम्भावनाएँ हैं जहाँ सत्य छिपा है। निस्सन्देह बुद्धि, तर्क और व्यवस्थित उन्माद के शिखर पर बसी दिव्य शक्ति - "अन्तर्ज्योति" ही कलाकर्म का सर्वश्रेष्ठ साधन है।

शान्ति और संगीता को "कला अड्डे" के उद्घाटन पर, स्नेह से-

रक्षा